वाक़िअए करबला

एक सलफी आलिम की कलम से

(हाफ़िज मुहम्मद इस्लामाईल सलफ़ी मर्हूम)

मुरत्तिब
खुसरो क़ासिम

रस्मुल खत हिन्दी
डो. शहेज़ादहुसैन क़ाज़ी

नाशिर : इमाम जा'फ़र सादिक़ फाउन्डेशन
(अह्ले सुन्नत)

वाक़िअ़ए करबला

एक सलफ़ी आ़लिम के क़लम से

(हाफ़िज़ मुहम्मद इस्माईल सलफ़ी मर्हूम)

मुरत्तिब

खुसरो क़ासिम

रस्मुल ख़त हिन्दी

डो. शहेज़ादहुसैन क़ाज़ी

:: नाशिर ::

इमाम जा'फ़र सादीक़ फाउन्डेशन (अहले सुन्नत)

किताब का नाम : **वाक़िअ़ए करबला**
एक सलफ़ी आ़लिम के क़लम से
(हाफ़िज़ मुहम्मद इस्माईल सलफ़ी मर्हूम)

मुरत्तिब : **ख़ुसरो क़ासिम**

रस्मुल ख़त हिन्दी : **डॉ. शहेज़ादहुसैन क़ाज़ी**

सफ़हात : **24**

सने ईशाअत : **2019**

कम्पोज़िंग : **इमाम जा'फ़र सादीक़ फाउन्डेशन** (अह्ले सुन्नत)
मोडासा, अरवल्ली, गुजरात, इन्डिया

मिलने का पता

इमाम जा'फ़र सादीक़ फाउन्डेशन

(अह्ले सुन्नत)

मोडासा, अरवल्ली, गुजरात, इन्डिया
+91 85110 21786

फेहरिस्त

अर्ज़े नाशिर

अल्लाह ﷻ ! के नाम से शुरु के जो बड़ा महरबान बख़्शनेवाला है, नही है कोई मा'बूद सिवा अल्लाह ﷻ ! के और मुहम्मद ﷺ अल्लाह ﷻ के रसूल है । अल्लाह ﷻ ! का शुक्रगुज़ार हूँ कि उसने मुझ से "वाक़िअ़ए करबला - एक सलफ़ी आ़लिम के क़लम से" किताबचे की हिन्दी किताबत करने का काम लिया ।

एक ऐसा भी वक़्त था जब मुसलमान हुक्मरानों ने अहले बैते अत्हार رضي الله عنهم, ख़ास कर बनू फ़ातिमा पर बडे अर्से तक वो ज़ुल्म किए जो शायद ही किसी नबी की आल पर उस नबी की उम्मत ने किये हो । ज़ुल्म आज भी हो रहा है सिर्फ तरीक़ा बदला है, उस ज़माने में आले मुहम्मद ﷺ को जिस्मानी तक़लीफें दी जाती थी, मिम्बरों पर उलमा को आले मुहम्मद ﷺ को बुरे अल्फाज़ो से याद करने पर मजबूर किया जाता था, मुहद्दिषीन को उनसे रिवायत लेने पर सजाएं दी जाती थी, कहीं इमामे आज़म अबू हनीफा رحمه الله को इमाम नफ़्सुसज़किया رضي الله عنه की मुहब्बत की वजह से कैद किया गया, तो कहीं इमाम शाफीई رحمه الله पर शिया-राफ़ज़ी के फ़तवे लगा कर उन्हें जलील किया गया, कहीं इमाम निसाई رحمه الله को मौला अ़ली رضي الله عنه की मुहब्बत की वजह से शहीद किया गया तो कही इमाम हाक़िम رحمه الله जैसे मुहद्दिषीन पर शिया के फ़तवे लगाकर उनके मिम्बर को तोड़ दिया गया । एक ज़माने तक ये चलता रहा मगर अहले बैत رضي الله عنهم के गुलाम कभी अम्मार बिन यासिर رضي الله عنه बनकर मैदाने जंग में आये तो कही अबू ज़र رضي الله عنه की तरह रज़ा-ए-इलाही में शहीद हुए । कहीं हबीब इब्न मज़ाहिर رضي الله عنه और हुर्र رضي الله عنه बनाकर करबला में आले मुहम्मद ﷺ पर जान लूटाने आए तो कहीं इल्म के मैदान में इमाम निसाई رحمه الله, इमाम हाक़िम رحمه الله, इमाम बुख़ारी رحمه الله, इमाम अबू हनीफ़ा رحمه الله, इमाम शाफीई

ﷺ बनकर आए तो कहीं दीन की तबलीग़ में ख़्वाजा गरीब नवाज़ ﷺ, निजामुद्दीन औलिया ﷺ, वारिसे पाक ﷺ, मख़्दुम माहिम ﷺ और मख़्दुम जलालुद्दीन जहाँगश्त ﷺ बनकर आए। वक़्तन फ वक़्तन हर मैदान में गुलामानें अह्ले बैत ﷺ नासबिय्यत व ख़ारजिय्यत के मुकाबले में आतें रहें, अपनी ख़िदमात देतें रहें और अपनी जानें भी कुर्बान करते रहें।

इस ज़माने में भी नासबिय्यत और ख़ारजिय्यत तमाम फिर्क़ो में अपना सर उठा रही है बल्कि कहेना चाहुँगा उरुज़ पर पहुँच रही है, फर्क सिर्फ इतना है जो नासबिय्यत की ड़ोर कल सल्तनत के बादशाहों ने अपनी बादशाहत की लालच में संभाली थी और उलमा-मुहद्दिषीन की गरदनों पर तलवारें रख़कर लोगों से फज़ाइले अह्ले बैत ﷺ छुपाकर, बुग्ज़े अह्ले बैत ﷺ को आम करवा रहे थे वो ही नासबिय्यत की बागडोर आज कल कुछ फिर्कापरस्त नाम निहाद पीर, उलमा व कुछ तन्ज़ीमों नें संभाल ली है। कल के उलमा मजबूरी में औलाद व जान-माल के डर से फज़ाइले अह्ले बैत ﷺ छुपा रहे थे और उनके बुग्ज़ में कुछ ने तो मौज़ूअ अहादीष तक घडनी शुरु कर दी थी, तो आज भी ऐसा ही हो रहा है फर्क सिर्फ इतना है आज के इस **Democracy** (जम्हूरियत) के ज़माने में उलमा की जान को या माल व औलाद को तो ख़तरा नही है मगर दुन्यवी लालच चाहे वो शोहरत पाने की हो या दौलत की हो , या चन्द फित्नापरस्त लोगों को ख़ुश करने के लिए हो, इसी वजह से आज के उलमा की एक जमाअत फज़ाइले अह्ले बैत ﷺ नहीं बता रही है बल्कि अवाम को क़ुर्आन व अह्ले बैत ﷺ से दूर किया जा रहा है। क़ुर्आन के तर्जुमे व तफसीर से उम्मत को दूर किया जा रहा है और मुहब्बते अह्ले बैत ﷺ पर शिया-राफ़ज़ी के फ़तवे लगाये जा रहे है, जबकि मुतवातिर ह़दीषे ग़दीर से रसूलुल्लाह ﷺ का कौल षाबित है कि नबीए करीम ﷺ ने फ़रमाया :

"मैं जिसका मौला हूँ अ़ली ﷺ भी उसके मौला है"

(अल मुजमुलकबीर, लि-तबरानी)

मुख्तसर हदीस :

"हो सकता है कि मुझे बुलाया जाए तो मैं कुबूल करुं, मैं तुम्हारे दरमियान दो भारी (अज़ीम) चीज़ें छोड़ कर जा रहा हूँ, इनमें से एक दूसरे से बढकर है, एक अल्लाह ﷻ की किताब और दूसरे मेरी इतरत या'नी मेरे अह्ले बैत ؑ, तो तुम सोच लो कि इन दोनों के बारे में मेरी कैसी जाँनशीनी करोगे, ये दोनों आपसमें जुदा नही होंगे ता आँ कि हौज़ पर आकर मुझ से मिले ।"

(इमाम निसाई फी ख़साइस अमीरुल मोमिनीन अ़ली बिन अबी तालिब ؓ)

अब कारिइन आपको सोचना है कि हमारे नबी ﷺ तो हमे कु़र्आन और अह्ले बैत ؑ से वाबस्तगी का हुक्म दे रहे है और नाम निहाद पीर व उलमा व कुछ तन्ज़ीमों की एक जमाअत फिर्कापरस्ती फैलाकर इनसे अवाम को दूर रखने का काम अन्जाम दे रहे है । आज माहौल ये बनाया जा रहा है कि जो अह्ले बैत ؑ से मुहब्बत करे उसे शिया, राफ़ज़ी जैसे अल्फाज़ो से उसे नवाज़ा जाता है, बेचारी अवाम को ये तक बताया नहीं जाता की सिर्फ मुहब्बत व फज़ीलते अह्ले बैत ؑ से कोई राफ़ज़ी नही बनता बल्कि जो सहाबाए किराम की शानमें लान व तान करता है उसे राफ़ज़ी कहा जाता है । मैं इस बात पर ज़्यादा लिखकर अपनी बात को तवील नहीं करना चाहता जो हक था वो बयान करने की कोशिश की है । अल्लाह ﷻ हम सबको नेक हिदायत दे आमीन....

अल्लाह ﷻ रब्बुल इज़्ज़त से दुआ है कि मेरी इस काविश को कु़बूल फरमाये और मेरी इस किताबचे की ईशाअत का सवाब तमाम उम्मते रसूलुल्लाह ﷺ के मोमिन व मोमिनात की रुहो को व मेरी नानी मोहतरमा मरहुमा ज़ुबैदाख़ातुन बिन्ते हुसैनमियाँ चौहाण की जिन्हों ने मुझे बचपन से मुहब्बते अह्ले बैत ؑ शिखायी, उनकी रुह को अता फ़रमाये और उनकी मग़फिरत फ़रमाये, सय्यिदा

ज़हराए पाक ﷺ के सदके उनके गुनाहों को बख़्श दे और उनको सय्यिदा जहराए पाक की कनीज़ों में शुमार करें । आमीन....

इस बीच प्रोफेसर ख़ुसरो क़ासिम साहब से मेरी मुलाकात और उनकी किताबों के हिन्दी, गुजराती ज़बान में किताबत व इशाअत के काम में हौंसला अफज़ाई करने वाले "ख़तीबे अह्ले बैत ﷺ मुफ़्ती शफ़ीक़ हनफ़ी क़ादरी साहब (मुम्बई)" का तहे दिल से शुक्रगुज़ार हूँ और जब भी किताब में किसी अरबी या उर्दू अल्फ़ाज़ के हिन्दी-गुजराती मअना में Confuse हुआ हूँ तब तब मेरी मदद पर हर वक़्त आमदा रहने वाले "दीवान मोहसीनशाह (सांसरोद,गुजरात)" का भी शुक्रगुज़ार हूँ।

अल्लाह ﷻ ! से दुआ है मेरी इस हक़ीर सी काविश को कुबूल फ़रमाए और मुझे रसूलुल्लाह ﷺ व अह्ले बैत ﷺ की शफाअत नसीब फरमाए ! आमीन

डो. शहज़ादहुसैन यासीनमियां क़ाज़ी
1 मुहर्रम, हिजरी सन 1441
(1 सप्टेम्बर, 2019)

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

पेश लफ्ज़

आजकल ख़ारजियत और नासबियत का ऐसा तूफ़ान आया हुवा है, के हर आदमी उस में एक दूसरे से बाज़ी ले जाने की फ़िक्र में है । मार्कीट में और मुख़्तलिफ़ websites पर उर्दू, अ़रबी और दूसरी ज़बानों में सैकड़ों कुतुब यज़ीद मलउ़न के दिफ़ाअ़ के लिये और वाक़ेआ़ करबला को एक इत्तेफ़ाक़ी ह़ादसा या नऊ़ज़ुबिल्लाह एक हुकूमत के बाग़ी की जंग की त़रह़ पेश करने के लिये लिखी जा रही हैं जिस में अह्ले ह़दीष या सलफ़ी ह़ज़रात सब से पेश पेश हैं । इस लिये मैं उन्हीं के एक इन्स़ाफ़ पसंद आ़लिम की तेह़रीर जो निस़्फ़ स़दी से भी पेहले लिखी गई थी, उस को अलग से एक किताबचे की शक्ल में शाएअ़ कर रहा हूं, येह तेह़रीर सलफ़ी ह़ज़रात के मश्हूर रिसाले "मुह़द्दिष" में जो लाहौर से शाएअ़ होता है, कुछ अर्स़ा पेहले छपी थी। अल्लाह पाक उस के मुस़न्निफ़ को भी जज़ाए ख़ैर दे और नाशिर भी अपने लिये शफ़ाअ़ते रसूल ﷺ व आले रसूल ﷺ का उमीदवार है ।

तालिबे दुआ़

ख़ुसरो क़ासिम

Assistant Professor

Mechanical Engineering Department
A.M.U Aligarh

मुसन्निफ़ का मुख़्तसर तआरुफ़

मुनाज़िरे इस्लाम हाफ़िज़ अ़ब्दुल क़ादिर रोपड़ी (अह्ले ह़दीष आ़लिमे दीन) के बड़े भाई ह़ाफ़िज़ मुह़म्मद इस्माईल रोपड़ी.....अल्लाह ﷻ उन पर अपनी करोड़ो रेह़मतें नाज़िल फ़रमाए....माज़ी क़रीब के अ़ज़ीम दीनी रेहनुमा और बेमिषाल ख़त़ीब हो गुज़रे हैं । क़यामे पाकिस्तान के बा'द के दो उशरे सरज़मीने वत़न के गोशे गोशे में आप ने तौह़ीदो सुन्नत के पैग़ाम को पहोंचाने में दीवानावार स़र्फ किए बिल्ख़ुसूस़ लाहौर, शैख़ूर पूरा, सरगोधा और कराची की बीसीयों मसाजिद आप की ह़सनाते बाक़ियात में से हैं जो आप के लिए अ़ज़ीम तोशाए आख़िरत हैं । इसी त़रह़ दौरे ह़ाज़िर के मुतअ़द्दिद नामवर अह्ले इ़ल्म ने आप की मुख़्लिस़ाना दा'वतो तरबियत के नतीजे में उस मुक़द्दस नबवी ﷺ मिशन के राही बनने की सआ़दत ह़ासिल की ।

आप की ज़ैरे नज़र तेह़रीर क़ारिईने 'मुह़द्दिष' के लिये एक नादिरो नायाब तोह़फ़ा है जो ई. **1950** के बा'द पेहली मर्तबा मुकम्मल सूरत में शाएअ़ हो रही है । ह़कीम याह्या अ़ज़ीज़ डाहरवी ने अपने ज़ाती रिकार्ड से इस क़दीम तेह़रीर को हमारे लिये मयस्सर किया है । तारीख़े इस्लाम के अहम तरीन वाक़ेए पर आप की येह माएनाज़ तेहक़ीक़ जहां इ़ल्मो जुस्तजू की एक दरख़्शिंदा मिसाल है । वहां ज़ाते नबवी ﷺ और अह्ले बैते इ़ज़्ज़ाम رضي الله عنهم से वालेहाना मुह़ब्बत और मुह़क़्क़िक़ाना मवाक़िफ़ की आईनए दार है ।

इस तेह़रीर के मुरत्तिब ह़ाफ़िज़ रोपड़ी मरह़ूम, मुदिरे आ'ला 'मुह़द्दिष' के क़रीबी रिश्तेदार होने के साथ ख़ास़ मुरब्बी भी थे । इस ए'तिबार से मुह़द्दिष की **40** साला ख़िदमात में भी उन का एक ह़िस़्स़ा मौजूद है और उन की इस तेह़रीर की इशाअ़त हमारे लिये सआ़दत का दर्जा रखती है । ह़ाफ़िज़ मौसूफ़ के इकलौते फ़रज़ंद ह़ाफ़िज़ अय्यूब इस्माईल भी अपने वालिद के मुख़्लिस़ाना जज़बए ईमानी के मिस़्दाक हमेशा से इदारा मुह़द्दिष और उस से वाबस्ता दीगर इदारों के ख़ुसूस़ी परस्तों और मुआ़विनों में शामिल हैं । अल्लाह ﷻ इन उ़लेमाए दीन की अ़ज़ीम ख़िदमात को शर्फे क़ुबूलियत से नवाज़े, और उन के नेक कामों को जारी व सारी रखने की तौफ़ीके अरज़ानी नसीब फ़रमाए । आमीन (ह़सन मदनी)

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

सलाम हो, मुहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ पर और आप की आल पर, क्या ही ख़ूश क़िस्मत हैं वोह लोग जिन को रसूलुल्लाह ﷺ और आप की आल के उस्वए ह़सना की इत्तिबाअ़ का फ़ख़्र ह़ासिल है और वोह जादअह ज़िंदगी के हर मरह़ले और हर शो'बे में रसूलुल्लाह ﷺ और स़ह़ाबाए किराम رضی اللہ عنہم के नक़्शे क़दम पर चलने में अपनी कामियाबी और नजात समझते हैं । दर अस़ल इन्हीं मुक़द्दस और बरगुज़ीदा हस्तीयों के उस्वए ह़सना की मुताबअ़त ऐ़न ईमान है । जो लोग इस राहे अ़मल के तारिक हैं या उस में ह़स्बे मन्शा तग़य्युर व तबद्दुल करते हैं, उन का ईमान मुश्तबा और मश्कूक है, इस लिये उन की नजात मह़ाल है ।

माहे मुहर्रमुल ह़राम से इस्लामी सने हिजरी शुरूअ़ होता है । वाक़ेआ़ करबला इसी माह में पेश आया । आज मिल्लते इस्लामीया का रवां हि **1370** (बमुत़ाबिक़ ई 1951) के सफ़र का आग़ाज कर रहा है । रब्बुल इ़ज़्ज़त दुनियाए इस्लाम के लिये हर नया साल मुबारक करे और अह्ले इस्लाम को रसूलुल्लाह ﷺ और स़ह़ाबाए रसूल رضی اللہ عنہم के उस्वए ह़सना पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ फ़रमाए । आमीन ।

वाज़िऐन व कज़्ज़ाबीन ने आले रसूल ﷺ से ता'स्सुब व इ़नाद के बाइ़स नासबियत का मुज़ाहिरा करते हूए आ़शूरा के दिन को मसर्रत व शादमानी (या'नी ख़ुशी) का दिन बावर कराने के लिये बहोत सारी रिवायात घड़ डाली और ऐसी अक्सर रिवायात ह़ुज्जाज बिन यूसुफ़ के ज़माने में वज़अ की गईं । उन में से चंद एक मुंदर्जा ज़ैल हैं :

1- जो शख़्स़ आ़शूरा के दिन आंखों में सुरमा लगाएगा, उस साल उस की आंखें न दुखेंगी ।

2- जिस शख़्स़ ने इस दिन अपने अह्लो अ़याल पर खाने पीने और लिबास में फ़राख़ी की, अल्लाह تعالیٰ उस पर सारा साल फ़राख़ी करेगा । इस क़िस्म की तमाम रिवायात वज़ई हैं ।

शैख़ इब्ने हजर ؒ का फ़तवा
(आशूरा के दिन से मुताल्लिक मौज़ूअ रिवायतें)

शैख़ अब्दुलहक़ मुहद्दिष दहेल्वी ؒ "मा षबत बिस्सुन्नाह" में शैख़ इब्ने हजर मक्की ؒ के हवाले से लिख़ते हैं :

"बा'ज़ अइम्माए हदीषो फ़िक़्ह से इस बारे में दरयाफ़्त किया गया कि आशूरा के दिन सुरमा लगाना, ग़ुस्ल करना, महंदी लगाना, मुख़्तलिफ़ क़िस्म के ख़ाने पकाना, नए कपड़े पेहनना और उस दिन ख़ूशी का इज़्हार करना कैसा है ? सब ने मुत्तफ़िक़ा तौर पर फ़तवा दिया कि इस बारे में कोई सहीह हदीष रसूलुल्लाह ﷺ से या कोई रिवायत सहाबा किराम ؓ से षाबित नही, ना अइम्माए इस्लाम ने इन चीज़ों को पसंद किया है और न मुस्तनद कुतुबे हदीष में इस बारे में कोई सहीह या ज़ईफ़ रिवायत मौजूद है" ।

अब हम हज़रत इमाम हुसैन ؓ की शहादत के असल वाकिआत और आप ؓ की मुख़्तसर तारीख़ वो सहीह व मुस्तनद कुतुब में मर्वी हैं को हदीयाए नाज़िरीन करते हैं ।

हज़रत इमाम हुसैन ؓ की सवानेह हयात

हज़रत इमाम हुसैन ؓ **4**/हिजरी में तवल्लुद हूए, हज़रत फ़ातिमतुज़्ज़हरा ؓ, हज़रत अली ؓ और हज़रत मुहम्मद ﷺ की मुबारको मुक़द्दस गोदों में परवरिश पा कर सिन्ने शुऊर को पहोंचे, आप ؓ सात बरस के थे कि रसूले अकरम ﷺ ने इस दारे फ़ानी से आलमे जाविदानी की तरफ़ रेहलत फ़रमाई । ख़िलाफ़त हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ ؓ के वक़्त आप ؓ की उम्र आठ बरस से ज़ियादा न थी । हज़रत सिद्दीक़ ؓ आप से बे इन्तिहा मुहब्बत करते थे और हज़रत उमर फ़ारूक़ ؓ को भी आप से बे इन्तिहा उल्फ़त थी ।

हज़रत उमर ؓ ने बदरी सहाबा के लड़कों का वज़ीफ़ा दो हज़ार दिरहम सालाना मुक़र्रर किया था मगर हज़रत हुसैन ؓ को पांच हज़ार दिरहम सालाना मिलते थे। हज़रत उषमान ؓ के ज़मानाए ख़िलाफ़त में मुफ़्सिदीन की शोरिश के

वक़्त आप ह़ज़रत उषमान ﷺ (की कस्रे ख़िलाफ़त) के मुह़ाफ़िज़ थे । जंगे जमल और जंगे सिफ़्फ़ीन में आप अपने वालिदे माजिद ﷺ के साथ शरीक हूए । जब 56/हिजरी में अमीर मुआ़वियाने अहले मदीना से यज़ीद की वली अ़हदी के ह़क़ में बै'त लेनी चाही मगर ह़ज़रत हुसैन ﷺ वग़ैरा इस से मुत्तफ़िक़ न हूए । इस पर अमीर मुआ़विया को भी आइन्दा ख़त़रात का एह़सास हो गया ।

इमारते यज़ीद

रजब 20/हिजरी में अमीर मुआ़विया ﷺ की वफ़ात हूई यज़ीद की बै'त को अक्षरियत ने क़ुबूल कर लिया । यज़ीद को सय्यिदिना हुसैन ﷺ और ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर ﷺ से ख़त़रा था । उस को यक़ीन था कि वोह ह़िजाज़ और इ़राक़ के मुसलमानों को उस के मुक़ाबले में खड़ा कर सकते हैं लिहाज़ा उस ने तख़्ते ख़िलाफ़त पर मुतमक्किन होने के साथ वलीद बिन उ़तबा (ह़ाकिमे मदीना) को ताकीदी हुकम भेजा कि ह़ज़रत हुसैन ﷺ और ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर ﷺ दोनों से बै'त ली जाए ।

वलीद को मरवान बिन ह़कम ने मश्वरा दिया के अगर ज़रा भी लैत व लअ़ल्ल (आगे-पीछे) करें तो क़त्ल कर दो । अगर येह दोनों इस वक़्त निकल गए तो फिर क़ाबू न आएंगे । वलीद ने सय्यिदिना हुसैन ﷺ को बुला भेजा । चूंकि अमीर मुआ़विया की अ़लालत की ख़बर मदीना में मश्हूर थी । इस लिये सय्यिदिना हुसैन ﷺ अपनी ह़िफ़ाज़त के लिये एक जमा'अत को अपने साथ लेते गए । जब मुलाक़ात हूई तो वलीद ने बै'त का मुत़ालबा किया । आप ﷺ ने फ़रमाया कि मैं छुप कर बै'त नही कर सकता, आ़म लोगों को बुलाओगे तो मैं भी आ जाउंगा । इसी अष्ना में येह ख़बर अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर ﷺ को भी पहूंच गई और वोह रात ही मक्के कि त़रफ़ निकल गए । चूंकि वलीद दिन भर उन की तलाश में सरगर्दां रहा, इस लिये वोह सय्यिदिना हुसैन ﷺ की त़रफ़ मुतवज्जे न हो सका । उस ने दूसरे दिन आप को बुलाया तो आप ने एक दिन की मोहलत मांगी, उसी अष्ना में अहले इ़राक़ के पै दर पै पैग़ामात पहूंचे के आप ख़िलाफ़त को क़ुबूल कीजिए । उसी कश्मकश में मुह़म्मद बिन ह़नफ़ीया ﷺ के मश्वरे से आप शा'बान 20/हिजरी में मदीना से निकल कर मक्का में तशरीफ ले गए ।

मुस्लिम बिन अ़क़ील ﵁ की शहादत

मक्का मुकर्रमा पहूंच कर आप ﵁ ने ह़ज़रत मुस्लिम बिन अ़क़ील ﵁ को तेहक़ीक़े ह़ालात के लिये कूफ़ा भेजा और एक क़ासिद बसरा की त़रफ़ रवाना किया। जासूसों ने येह ख़बरें उसी वक़्त यज़ीद को पहूंचाईं, उस ने उ़बैदुल्लाह बिन ज़ियाद (ह़ाकिमे बसरा) को ताकीदी हुक्म भेजा कि मुस्लिम बिन अ़क़ील ﵁ को कूफ़ा से निकाल दो, अगर मज़ाह़मत करे तो उसे क़त्ल कर दो, बसरा में सय्यिदिना हुसैन ﵁ का भेजा हुवा क़ासिद गिरफ़्तार कर के क़त्ल कर दिया गया।

मुस्लिम बिन अ़क़ील ﵁ को हानी बिन उ़र्वा ﵁ ने अपने ज़नानख़ाना में ठेहराया और यहीं चंद रोज़ में अट्ठाराह हज़ार अह्ले कूफ़ा ने सय्यिदिना हुसैन ﵁ की बैअत क़ुबूल कर ली, इब्ने ज़ियाद ने हरचंद मुस्लिम ﵁ की तलाश की मगर कुछ सुराग़ न मिल सका। अख़िर कार उस के ग़ुलाम मा'क़ल ने इस ख़ुफ़िया इन्तज़ाम का सुराग़ लगाया। इब्ने ज़ियाद ने पेहले हानी बिन उ़र्वा ﵁ को गिरफ़्तार किया और उन से मुस्लिम ﵁ का मुत़ालबा किया। मगर उन्हों ने स़ाफ़ इन्कार कर दिया के मैं मौत को क़ुबूल करूंगा मगर अपने मेहमान और पनाहगुज़ीं को ह़वाले नहीं कर सकता, उसी दौरान में येह अफ़वाह उड़ गई कि हानी ﵁ क़त्ल कर दिया गया। इस पर हानी ﵁ के क़बीले के हज़ारहा लोगों ने क़स्रे ख़िलाफ़त का मुह़ासरा कर लिया और मुस्लिम बिन अ़क़ील ﵁ अपने अट्ठाराह हज़ार रफ़ीक़ो के साथ हमलावार हो गए। उस वक़्त इब्ने ज़ियाद के साथ सिर्फ़ पचास आदमी मौजूद थे, उस ने मह़ल का दरवाज़ा बंद कर लिया और मुअ़ज़्ज़ीने शहर को हुक्म दिया कि छतों पर चढ़ कर लोगों को लालच और ख़ौफ़ से मुन्तशिर होने की तरग़ीब दी जाए। येह तदबीर कारगर षाबित हूई और मुस्लिम ﵁ के रुफ़क़ाअ मुन्तशिर होने लगे। शहर के लोग आते थे और अपने अ़ज़ीज़ों को हटा कर ले जाते थे यहां तक कि मुस्लिम बिन अ़क़ील ﵁ के हमराह सिर्फ़ तीस आदमी खड़े रेह गए। आप उन रुफ़क़ाअ के साथ मुह़ल्ला कन्दा की त़रफ़ हट आए। यहां येह तीस भी आप ﵁ से जुदा हो गए और आप तन्हा खड़े रेह गए और एक औ़रत के हां पनाह ली। इब्ने ज़ियाद ने सुराग़ लगाने के बा'द

आदमीयों के साथ उस मकान का मुहासरा कर लिया मगर मुस्लिम बिन अ़क़ील ﷺ ख़ौफ़ज़दा न हूए बल्कि इस हिम्मत से मर्दानावार मुक़ाबला किया कि सब को मकान से बाहर कर दिया। उन्हों ने फिर ह़मला किया मगर आप ने फिर उन्हें धकेल दिया। एक शख़्स ने आप ﷺ के चेहराए मुबारक पर वार किया जिस से आप का उपर का होंट कट गया और दो दांत झटका खा गए। बाक़ी 69 आदमी मकान की छत पर चढ़ कर आ गए और पत्थर बरसाने लगे अब सय्यिदिना मुस्लिम ﷺ गली में निकल कर मुक़ाबला करने लगे और लड़ते लड़ते ज़ख़्मों से चूर हो गए, जब क़ुव्वत ने बिल्कुल जवाब दे दिया तो दीवार से टेक लगा कर बैठ गए। उस वक़्त मुहम्मद बिन अशअ़ष ने उन्हें पनाह का वा'दा दे कर गिरफ़्तार कर लिया।

इस के बा'द आप को इब्ने ज़ियाद के सामने पेश किया गया। मुह़म्मद बिन अशअ़ष ने कहा कि मैं मुस्लिम को पनाह दे चुका हूं, लेकिन इब्ने ज़ियाद ने उसे तस्लीम न किया और हुक्म दिया की उन्हें क़त्ल कर दिया जाए। आप ﷺ ने इब्ने ज़ियाद की इजाज़त से उ़मर बिन सा'द को वसि़यत की के सय्यिदिना हुसैन ﷺ आ रहे होंगे, उन के पास आदमी भेज कर उन्हें रास्ते ही में वापस कर दिया जाए। वसि़यत हो चुकी तो आप को मह़ल की बालाई मंज़िल पर ले जा कर शहीद कर दिया गया और आप की लाश और सर नीचे फेंक दिये गए। इस त़रह़ ह़ज़रत मुस्लिम ﷺ की शहादत की सूरत में सय्यिदिना हुसैन ﷺ का एक निहायत क़वी बाज़ू टूट गया। اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّا اِلَیْہِ رَاجِعُوْنَ.

मक्का मुकर्रमा से सय्यिदिना हुसैन ﷺ की रवानगी

मुस्लिम बिन अ़क़ील ﷺ ने पेहला ख़त जो सय्यिदिना हुसैन ﷺ की ख़िदमत में भेजा था कि तमाम शहर आप की तशरीफ़ आवरी का मुन्तज़िर है, तशरीफ़ ले आएं। आप ﷺ येह ख़त देखते ही सफ़र के लिये तैयार हो गए। जब दोस्तों और अ़ज़ीज़ों को इ़ल्म हुवा तो उन्हों ने आप ﷺ को निहायत शिद्दत से रोका। उ़मर बिन अ़ब्दुर्रह़मान ने कहा कि कूफ़ा के लोग रुपिये-पैसे के गुलाम हैं जो लोग आज आप को बुलाते हैं, वही कल आप से जंग करेंगे। सय्यिदिना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास ﷺ ने ख़ुदा का वास्ता दे कर कहा कि आप मक्का से ह़रकत न करें इराक़ी आप को यक़ीनन बेयार व मददगार छोड़ेंगे।

हालाते सफ़र

अष्नाए सफ़र भी आप ﷺ के बा'ज़ अहबाब ने बज़रीए ख़ुतूत अ़र्ज़ की के सफ़र के इरादे को तर्क कर दीजिये मगर तक़दीर आप ﷺ को कशां कशां मक़्सूदिया मैदाने करबला की त़रफ़ ले जा रही थी । इस लिये आप ﷺ पर किसी की अपील या मश्वरे का कोई असर न हुवा । आप ﷺ ने उ़मर बिन सा'द के ख़त के जवाब में लिखा है :

"जो शख़्स अल्लाह ﷻ की त़रफ़ बुलाता है। अ़मले सालेह़ करता है और इस्लाम का मो'तरिफ़ है, वोह अल्लाह ﷻ और उस के रसूल ﷺ से क्यूंकर इख़्तिलाफ़ कर सकता है । तुमने मुझे अमान, भलाई और सिलह रहमी की दा'वत दी है । पस बेहतरीन इमान अल्लाह ﷻ की अमान है । जो शख़्स दुनिया में ख़ुदा तआ़ला से नहीं डरता, ख़ुदा क़यामत के दिन उसे अमन नहीं देगा । इसलिये मैं दुनिया में ख़ुदा का ख़ौफ़ चाहता हूं ताकि क़यामत के दिन में उस की अमान का मुस्तहिक़ हो जाउं । अगर ख़त से तुम्हारी निय्यत मेरे साथ सिलह रहमी और भलाई की है तो ख़ुदा तुम्हें दुनिया व आख़िरत में जज़ाए ख़ैर दे" ।

इधर अहले बैते किराम का क़ाफ़िला मनाज़िल तै कर रहा है । उधर इब्ने ज़ियाद ने क़ादसिया से ले कर ख़फ़ान, कुतकुताना और जबले ब'अल'अ तक जासूस और सवार रवाना कर दिये ताकि हज़रत हुसैन ﷺ की नक़लो हरकत की जुम्ला ख़बरें मिलती रहें ।

सय्यिदिना हुसैन ﷺ ने 'हाजिज़' पहूंच कर क़ैस बिन मुसहिर ﷺ के हाथ अहले कूफ़ा को अपनी आमद का ख़त इरसाल किया । लेकिन इब्ने ज़ियाद के तमाम इन्तिज़ाम मुकम्मल थे । क़ैस ﷺ को क़ादसिया में गिरफ़्तार कर लिया गया और इब्ने ज़ियाद ने उन्हें छत से गिरा कर शहीद कर दिया ।

'बत़ने रमला' मक़ाम पर अ़ब्दुल्लाह बिन मुतीअ़ से आप ﷺ की मुलाक़ात हूई, उस ने साफ़ तौर पर बयान कर दिया है कि आप हरगिज़ हरगिज़ कूफ़ा का क़स्द न करें, आप वहां यक़ीनन शहीद कर दिये जाएंगे । जब ष'अलबा में पहूंचे तो आप ﷺ

को मुस्लिम बिन अ़क़ील ﷺ और हानी बिन उ़र्वा ﷺ की शहादत की अलमनाक इत्तिलाअ़ मिली, इस मौकाअ़ से फ़ाइदा उठा कर ख़ैरख़्वाहों ने फिर अ़र्ज़ किया कि आप यहीं से वापिस जाएं, लेकिन मुस्लिम ﷺ के भाईयों ने पेश कदमी की राए दी, इस त़रह़ अह्‌ले बैत का क़ाफ़िला एक मंज़िल और आगे बढ़ गया । 'ज़ुबार' पहूंचकर आप ﷺ को अपने क़ासिद अ़ब्दुल्लाह बिन बक़्तर ﷺ के क़त्ल की इत्तिलाअ़ मिली और साथ ही मुस्लिम बिन अ़क़ील ﷺ की वसियत के मुत़ाबिक आदमी पहूंचे कि यहां का ह़ाल बदल चुका है । उस मवाक़ेअ़ पर सय्यिदिना ह़ुसैन ﷺ ने साथियों को जमा' कर के एक पुर दर्द तक़रीर फ़रमाई । जिस में आप ﷺ ने फ़रमाया "हमारे दोस्तों ने हमारा साथ छोड़ दिया है । चुनांचे जो शख़्स़ लौटना चाहे वोह ख़ुशी से अलग हो जाए, हमें कोई शिकायत नहीं" ।

इस पर बेशुमार लोग जो रास्ते में आप के साथ हो गए थे, अलग हो गए और सिर्फ़ वही वफ़ा शिआ़र जांनिसार साथ रहे जो मदीना से आप ﷺ के साथ आए थे । 'बत़ने उ़क़बा' पर आप को फिर वापसी की तरग़ीब दी गई मगर आप ने फ़रमाया "ख़ुदा के हुक्म के ख़िलाफ़ नहीं किया जा सकता ।"

ख़ूनी साल की इब्तिदा

जब आप शराफ़ में पहूंचे तो मुह़र्रम 61/हिजरी का ख़ूनी साल शुरूअ़ हुवा और उसी मक़ाम पर ह़ुर बिन यज़ीद तमीमी एक हज़ार सवारों के साथ आप ﷺ के मुक़ाबिल आ ठहरा । नमाज़े ज़ुहर के वक़्त आप ने ह़ुर के लश्कर के सामने ख़ुत्बा इर्शाद फ़रमाया कि :

"मैं तुम्हारी दा'वत और अ़हदो पैमान के मुत़ाबिक़ यहां आया हूं । मेरे पास इस मज़मून के तुम्हारे ख़ुत़ूत़ और क़ासिद आए कि हमारा कोई इमाम नहीं, आप आईये शायद ख़ुदा आप ही के ज़रीए़ हमें सीधे रास्ते लगा दे । चुनांचे अब मैं आ गया हूं, अगर तुम लोग मेरे साथ पुख़्ता वा'दा कर के मुझे यक़ीन दिला दो तो मैं तुम्हारे शहर में चलुं । लेकिन अगर तुम ऐसा नही करते और तुम्हें हमारा आना नापसंद हो तो मैं जहां से आया हूं वहीं लौट जाउंगा" ।

नमाज़े अ़स्र के बा'द आप ने फिर इसी मज़्मून की तक़रीर की तो हुर ﷺ ने जवाब दिया कि हमारा ख़त लिखने वालों से कोई ता'ल्लुक नहीं । हम इब्ने ज़ियाद के सिपाही हैं और हमें येह हुक्म है कि आप के साथ लगे रहें यहां तक कि कूफ़ा में आप को इब्ने ज़ियाद के पास पहूंचा दें । इस मौकाअ़ पर सय्यिदिना हुसैन ﷺ ने क़ाफ़िला अहले बैत को वापस लौटाना चाहा मगर हुर ने रास्ता रोक लिया । आप ﷺ मदीना तय्यबा की तरफ़ जाना चाहते थे मगर हुर ﷺ चाहता था कि आप को कूफ़ा ले जाया जाए । मज़ीद गुफ़्तगु के बा'द हुर ने येह इजाज़त दी के अगर आप कूफ़ा नही जाना चाहते तो आप ऐसा रास्ता इख़्तियार करें जो न कूफ़ा को जाए और न मदीना को । इसी दौरान में मैं इब्ने ज़ियाद को लिखता हूं और आप यज़ीद को लिखें, मुमकिन है आ़फ़ियत की कोई सूरत पैदा हो जाए । इस क़रारदाद के बा'द आप एक ऐसे रास्ते पर रवाना हूए जिस की आख़री अलमनाक मंज़िल 'करबला' थी ।

मैदाने करबला अज़ वाक़ेआ शहादत सय्यिदिना हुसैन ﷺ

इब्ने ज़ियाद की तरफ़ से हुक्म दिया गया कि क़ाफ़िलाए अहले बैत को एक ऐसे मैदान में घेर कर ले जाओ जहां कोई क़िल्आ़ और पानी का चश्मा न हो । इस हुक्म के बा'द हुर ﷺ ने मज़ाहमत की । येह **2** मुहर्रम **60** हिजरी का वाक़िआ़ है कि क़ाफ़िलाए अहले बैत अपने आख़री मुस्तक़िर या'नी 'नैनवां' के 'मैदान करबो बला' में ख़ेमाज़न हो गया । ज़ुहैर बिन क़ैन ﷺ ने कहा या इब्ने रसूलुल्लाह ﷺ आइन्दा जो वक़्त आएगा, वोह इस भी ज़ियादा सख़्त होगा, अभी लड़ना आसान है, इस रास्ते के बा'द ख़ौफ़ो जैस आएंगे, हम इन के साथ लड़ न सकेंगे, लेकीन इस उस मुजस्समाए शराफ़तो ईषार ने जवाब में फ़रमाया कि "मैं अपनी तरफ़ से लड़ाई की इब्तिदा न करूंगा" ।

3 मुहर्रम **61** हिजरी को उ़मर बिन सा'द चार हज़ार फ़ौज के साथ आप के मुक़ाबिल आ ख़ड़ा हुवा । उ़मर बिन सा'द ने क़ुर्रह बिन सअ़'द हन्ज़ली को मुलाक़ात के लिये भेजा तो सय्यिदिना हुसैन ﷺ ने फ़रमाया कि मुझे तुम्हारे शहरवालों ने ख़ुतूत लिख कर बुलाया है, अब अगर मेरा आना तुम को पसंद न हो तो मैं लौट जाता हूं ।

इब्ने सा'द इस जवाब से बहोत मुतअस्सिर हुवा और तमाम वाक़ेआ इब्ने ज़ियाद को लिख कर भेजा, उस ने जवाब दिया कि तुम हुसैन رضی اللہ عنہ और उस के साथीयों से यज़ीद की बै'त लो। अगर वोह बै'त कर लें तो फिर देखा जाएगा।

इस के बा'द ही दूसरा हुक्म येह पहूंचा कि क़ाफ़िलाए अह्ले बैत पर पानी बंद कर दिया जाए। इस हुक्म पर इब्ने सा'द ने पांच सौ सवारों का एक दस्ता दरियाए फ़ुरात पर पानी रोकने के लिए मुतअय्यन कर दिया। **इस दस्ते ने सातवीं मुहर्रम से पानी रोक दिया।** अ़ब्दुल्लाह बिन अबू हुसैन शामी ने सय्यिदिना हुसैन رضی اللہ عنہ से मुख़ातिब होकर कहा हुसैन رضی اللہ عنہ पानी देखते हो, कैसा आसमान के जिगर की तरह छलक रहा है लेकिन ख़ुदा की क़सम तुम्हें एक क़तरा भी नही मिल सकता, तुम इसी तरह प्यासे मरोगे।

इस के बा'द 9 मुहर्रम को अ़सर के वक़्त उस ने फ़ौज को तैय्यारी का हुक्म दे दिया, हज़रत हुसैन رضی اللہ عنہ ने फ़रमाया कि मैं नमाज़ो दुआ के लिये एक रात की इजाज़त चाहता हूं।

रात के वक़्त हज़रत हुसैन رضی اللہ عنہ ने अपने साथीयों को एक दर्दनाक ख़ुत्बा दिया। आप رضی اللہ عنہ ने फ़रमाया "इलाही ! तेरा शुक्र है कि तूने हमारे घराने को नुबुव्वत से मुशर्रफ़ फ़रमाया और दीन की समझ और क़ुरआन का फ़हम अ़ता फ़रमाया। लोगो ! मैं नहीं जानता कि आज रूए ज़मीन पर मेरे साथीयों से अफ़ज़ल और बेहतर लोग भी मौजूद हैं या मेरे अह्ले बैत से ज़ियादा हमदर्द व ग़मगुसार किसी के अह्ले बैत हैं, अय लोगो ! ख़ुदा तुम्हें जज़ाए ख़ैर दे, कल मेरा और उन का फ़ैसला हो जाएगा, ग़ौरो फ़िक्र के बा'द मेरी राए है कि रात के अंधेरे में तुम सब ख़ामोशी से निकल जाओ और मेरे अह्ले बैत को साथ ले जाओ। मैं ख़ूशी से तुम्हें रुख़सत करता हूं, मुझे कोई शिकायत न होगी, येह लोग सिर्फ़ मुझे चाहते हैं और मेरी जान ले कर तुम से ग़ाफ़िल हो जाएंगे।"

हज़रत सय्यिदिना हुसैन رضی اللہ عنہ के इन अल्फ़ाज़ से अह्ले बैत फ़र्ते बेक़रारी से तड़प उठे और सब ने बिलइत्तिफ़ाक़ आप से वफ़ादारी और जांनिसारी का अ़हद किया। जब वफ़ादारों की गर्म जोशीयां ख़त्म हुईं तो नमाज़ के लिये सफ़ें आरास्ता

की गईं, सय्यिदिना हुसैन ﷺ और उन के रुफ़्क़ा सारी रात नमाज़, इस्तिग़फ़ार, तिलावते क़ुरआन, दुआ़ व तज़र्रुअ में मशग़ूल रहे और दुश्मन के तैग़ बकफ सवार रात भर लश्करे हुसैन ﷺ के गिर्द चक्कर लगाते रहे ।

10 मुहर्रम **61** हिजरी को जुम्आ़ के दिन नमाज़े फ़जर के बा'द उ़मरो बिन सा'द चार हज़ार सवारों को लेकर निकला । हज़रत हुसैन ﷺ ने भी अपने अस्हाब की सफ़ें काइम कीं, लश्करे हुसैन ﷺ महज़ गिनती के सवारों और चंद पैदल अफ़राद पर मुश्तमिल था ।

सय्यिदिना हुसैन ﷺ का दर्दनाक ख़ुत्बा

जब दुश्मन की फ़ौज ने पेश क़दमी की तो इस मुजस्समे ईषारो क़ुरबानी और सब्र व इस्तिक़ामत के पैकर ने उन के सामने ब आवाज़े बलंद मुन्दर्जा ज़ैल ख़ुत्बा इरशाद फ़रमाया :

“लोगो ! मेरा हसबो नसब याद करो, सोचो ! मैं कौन हूं, फिर अपने गिरेबानों में नज़र डालो और अपने ज़मीर का मुहासबा करो, क्या तुम्हारे लिये मुझे क़त्ल करना और मेरी हुरमत का रिश्ता तोड़ना जाइज़ है ? क्या मैं तुम्हारे नबी ﷺ की लड़की का बेटा, उन के चचेरे भाई अ़ली ﷺ का फरज़न्द नहीं हूं ? क्या तुमने रसूलुल्लाह ﷺ को मेरे और मेरे भाई के हक़ में येह फ़रमाते हुए नहीं सुना : سيدا شباب أهل الجنة (जवानाने जन्नत के सरदार) अगर मेरा बयान सच्चा है और ज़रूर सच्चा है, क्यूंकि मैंने अब तक झूट नहीं बोला तो बताओ क्या तुम बरहना तलवारों से मेरा मुक़ाबला करना चाहते हो ? क्या येह बात भी तुम्हें मेरा ख़ून बहाने से नहीं रोक सकती ? वल्लाह इस वक़्त रूए ज़मीन पर बजुज़ मेरे, किसी नबी की लड़की का बेटा मौजूद नहीं। मैं तुम्हारे नबी ﷺ का बिलावास्ता नवासा हूं । क्या तुम मुझे इसलिये हलाक करना चाहते हो कि मैं ने किसी की जान ली है ? किसी का ख़ून बहाया है ? किसी का माल छीना है । कहो क्या बात है.....आख़िर मेरा क़ुसूर क्या है” ।

आप ﷺ ने बार बार पूछा मगर किसी ने जवाब न दिया फिर आप ने बड़े बड़े कूफ़ीयों को नाम ले कर पुकारना शुरूअ़ किया, अय शीष बिन रबीअ़, अय हिज्जाज़ बिन बजुज़, अय क़ैस बिन अशअ़ष, अय यज़ीद बिन हारिष क्या तुमने मुझे नही

लिखा था कि फ़ल पक गए, ज़मीन सरसब्ज़ हो गई, नहरें उबल पड़ीं, अगर आप आएंगे तो अपनी जरार फौज के पास आएंगे सो जल्द आ जाएं ।

इस पर उन लोगों ने इन्कार किया तो आप ने चिल्ला कर कहा वल्लाह ! तुम ही ने लिखा था । आख़िर में आप ﷺ ने कहा अगर मुझे पसंद नहीं करते तो छोड़ दो मैं यहां से वापिस चला जाता हूं ।

कैस बिन अशअष ने कहा आप अपने आप को अपने अम्ज़ादों के ह़वाले कर दें, इस के जवाब में आप ﷺ ने फ़रमाया "वल्लाह ! मैं ज़िल्लत के साथ कभी अपने आप को उन के ह़वाले न करूंगा" ।

जिस वक़्त इब्ने सा'द ने फ़ौज को ह़रकत दी तो हुर ﷺ उन से कट कर अ़लेह़दा होने लगा तो जर बिन ओस ने उस से कहा मुझे तुम्हारी ह़ालत मुश्तबा मा'लूम होती है । हुर ﷺ ने संजीदगी से जवाब दिया ख़ुदा की क़सम ! मैं जन्नत या दोज़ख़ का इन्तिख़ाब कर रहा हूं । बख़ुदा मैंने जन्नत मुन्तख़ब कर ली है । येह कहा और घोड़े को ऐड़ लगाकर लश्करे हुसैन ﷺ में पहूंच गया और निहायत आ़जिज़ी और इन्किसारी से मुआ़फ़ी का ख़्वास्तगार हुवा, आप ﷺ ने उसे मुआ़फ़ फ़रमा दिया ।

जंग की इब्तिदा

इस वाक़िए के बा'द उ़मरो बिन सा'द ने कमान उठाई और लश्कर की त़रफ़ येह केह कर तीर फेंका कि गवाह रहो, सब से पेहला तीर मैंने चलाया है ।

मुख़्तस़र सी मुबारज़त त़लबी के बा'द उ़मरो बिन सा'द की फ़ौज लश्करे हुसैन ﷺ पर टूट पड़ी, हर त़रफ़ जंग का मैदान गर्म हो गया और ख़ून के फ़व्वारे उबलने लगे । सय्यिदिना हुसैन ﷺ के शेर दिल सिपाही जिस त़रफ़ रुख़ करते, सफ़ों को उलट देते थे । मगर कषीर ता'दाद दुश्मन ज़रासी देर में फिर हुजूम कर आता था, चन्द घंटों में लश्करे हुसैन ﷺ के बड़े बड़े नामवर बहादुर मुस्लिम बिन औसजा, हुर और ह़बीब बिन मज़ाहिर ﷺ शहीद हो गए । जब दुश्मन के सिपाही सय्यिदिना हुसैन ﷺ के क़रीब पहूंचे तो नमाज़ का वक़्त क़रीब था । आप ने अबू षमामा से फ़रमाया दुश्मनों से कहो कि हमें नमाज़ की मोहलत दें, मगर दुश्मन ने येह दरख़्वास्त मंजूर न की और लड़ाई बदस्तूर जारी रही ।

अह्‌ले बैत को स़ब्र की तल्क़ीन

सय्यिदिना हुसैन ﵁ के सब रुफ़क़ा यक बा'द दीगरे शहीद हो चुके तो बनी हाशिम ख़ानदाने नबुव्वत की बारी आई । सब से पेहले सय्यिदिना अ़ली अकबर ﵁ शहीद हूए, सय्यिदिना हुसैन ﵁ ने सय्यिदिना अ़ली अकबर ﵁ की लाश उठाई और ख़ैमे के पास रख दी, इस के बा'द सय्यिदिना हुसैन ﵁ मैदाने जंग से सय्यिदिना क़ासिम बिन ह़सन ﵁ की लाश उठा कर ख़ैमें के पास लाए और सय्यिदिना अ़ली अकबर ﵁ के पेहलू में लिटा दिया । अह्‌ले बैत के रोने की आवाज़ आप को सुनाई दी तो आपने अह्‌ले बैत को मुख़ातिब कर के फ़रमााया :

"صبرًا أهل بيتي صبرًا يا بني أعمامي لما رأيتم هوانًا بعد ذلك" ۔

"अय अह्‌ले बैत ! स़ब्र करो, अय मेरे चचा की अवलाद ! स़ब्र करो इस के बा'द कोई तकलीफ़ न देखोगे" ।

जिस वक़्त सय्यिदिना अ़ब्दुल्लाह बिन ह़सन ﵁ ने अपने चचा सय्यिदिना हुसैन ﵁ पर दुश्मन को वार करते देखा तो उस पैकरे वफ़ाने लपक कर अपने हाथ से तलवार के वार को रोका, उन का दायां बाज़ू शाने से कट कर जुदा हो गया । सय्यिदिना हुसैन ﵁ ने अपने नौ जवान भतीजे को छाती से लगाया और फ़रमाया :

اصبر على ما نزل بك واحتسب في ذلك الخير فان الله تعالیٰ يلحقك بآبائك الصلحين

"अय भतीजे ! जो मुस़ीबत इस वक़्त तुम पर आई है, इस पर स़ब्र करो और सवाब के उम्मीदवार रहो बहोत जल्द ख़ुदा तुझे तेरे स़ालेह़ बाप दादा से मिलायेगा" ।

एक शीर ख़्वार की शहादत

इस के बा'द सय्यिदिना हुसैन ﷺ का साहबज़ादा सय्यिदिना अली असग़र ﷺ जब शिद्दते प्यास से तड़पने लगे तो आप ﷺ उन को गोद में उठा कर लाए और दुश्मनो को मुख़ातिब कर के फ़रमाया :

"तुम्हें मुझ से तो अदावत हो सकती है लेकिन इस मा'सूम बच्चे के साथ तुम्हें क्या दुश्मनी है ? इस को तो पानी दो कि शिद्दते प्यास से दम तोड़ रहा है ।"

इस के जवाब में दुश्मन की तरफ़ से एक तीर आया जो उस बच्चे के हलक़ में पैवस्त हो गया और वोह मा'सूम वहीं जां बहक़ हो गया । सय्यिदिना हुसैन ﷺ ने इस क़दर होशरुबा सानिहा पर भी कमाले सब्र व सुकून का मुज़ाहरा किया या'नी उस के ख़ून से चुल्लुभर कर आसमान की तरफ़ फेंका और फ़रमाया :

اللهم هون على مانزل به انه لايكون أهون عليك من قتل ناقة صالح

"या अल्लाह ! जो मुसीबत इस वक़्त इस पर नाज़िल है, उस को तू आसान कर, मुझे उम्मीद है के इस मा'सूम बच्चे का ख़ून तेरे नज़दीक हज़रत सालेह ﷺ की उंटनी से कम नहीं होगा" ।

नवासाए रसूल ﷺ का बेमिषाल सब्र व इस्तिक़लाल

जब अहले बैत एक एक कर के शहीद हूए तो हज़रत सय्यिदुश्शोहदाअ की बारी आई और दुश्मन की तलवार नवासए रसूल ﷺ के जिस्मे अतहर पर टूट पडी । आप ने निहायत सब्र व इस्तिक़ामत से दुश्मनों के हमलों का मुक़ाबला किया। बेशुमार दुश्मनों को मौत के घाट उतारा । तने तन्हा हज़ारों का मुक़ाबला कर रहे थे। शिद्दते प्यास से ज़बान सूख कर कांटा हो चुकी थी, तीन रोज़ से पानी की एक बूंद लबों तक न पहोंची थी, उपर से झुल्सा देनेवाली धूप, नीचे से तपती हुई रेत, अरब की गर्मी, मौसम की सख़्ती और बादे समूम का ज़ोर, रेत के ज़र्रों की परवाज़ जो

चिन्गारीयां बन कर जिस्म से लिपटे थे । ह़ज़रत सा'द बिन वक़्क़ास ﷺ (फ़ातेह़े ईरान) का बदनिहाद बेटा हुकूमत की लालच से अन्धा हो कर अब ख़ानदाने रिसालत के आख़री चराग़ ह़ज़रत हुसैन ﷺ की शम्ए ह़यात को भी बुझाने के लिये बेताब नज़र आ रहा है । **आप ﷺ के जिस्मे अत़हर में तीरों और नेज़ों के 80 ज़ख़्म पड़ चुके थे ।** तमाम बदन छलनी बना हुवा था मगर आप ﷺ फिर भी निहायत शुजाअ़त और षाबित क़दमी से दुश्मन का मुक़ाबल कर रहे थे ।

शिम्र बिन ज़ीलजोशन ह़ज़रत हुसैन ﷺ की पामर्दी और इस्तिक़ामत देख़ कर बहोत ह़ैरानो सरासीमा हो गया और उस ने सय्यिदिना हुसैन ﷺ की तवज्जोह मैदाने जंग से हटाने के लिये येह चाल चली कि फ़ौज से एक दस्ता अ़लेह़िदा कर के अह्ले बैत के ख़ैमो का मुह़ासरा कर लिया, इस पर आप ﷺ ने झल्लाकर फ़रमाया :

"अय लोगो शर्म करो ! तुम्हारी लड़ाई मुझ से है या बे कस व बेक़ुसूर औ़रतो से कमबख़्तों कम अज़ कम मेरी ज़िंदगी में तो अपने घोड़ों की बागें उधर न बढ़ाओ"।

शिम्र नाबिकार ने शर्मिंदा हो कर अह्ले बैत से मुह़ासरा उठा लिया और हुक्म दिया कि आख़री हल्ला बोल दो । आख़िर पूरी की पूरी फ़ौज दरिन्दों की त़रह़ सय्यिदिना हुसैन ﷺ पर टूट पड़ी । आप ﷺ सफ़ों को चीरते हूए फ़रात पर पहोंच गए और येह केह कर घोड़े को दरया में डाल दिया कि मैं भी प्यासा हूं और तू भी प्यासा है। जब तक तू अपनी प्यास न बुझाएगा, मैं पानी को हाथ न लगाउंगा । घोड़ा पानी पी चुका तो आप ﷺ ने पीने के लिये पानी चुल्लू में लिया और चाहते थे के उस से अपना ह़लक तर करें के यकायक तीर सामने से आ कर लबहाए मुबारक में पैवस्त हो गया । आप ने पानी हाथ से फ़ेक दिया, तीर ख़ींच कर निकाला और मुंह ख़ून से लबरेज़ हो गया । आप ख़ून की कुल्लीयां करते हूए बाहर निकले और फ़रमाया :

"बारे इलाहा ! तू देख़ रहा है के येह लोग तेरे रसूल ﷺ के नवासे पर क्या क्या ज़ूल्म कर रहे हैं" ।

इतने में आवाज़ सुन कर सराअ़त से आप ख़ैमों की त़रफ़ पल्टे। रास्ते में दुश्मनों के पारे के पारे लगे खड़े थी। आप उन्हें चीरते हूए ख़ैमों में पहोंच गए। ह़ज़रत हुसैन ﷺ को मजरूह़ और ख़ून में शराबोर देख कर ख़ैमों में कोहराम मच गया। आप ने उन्हें स़ब्र की तल्क़ीन की और बाहर निकल आए एक तीर आप की पेशानी पर लगा जिस से सारा चेहरा मुबारक लहूलुहान हो गया। चंद लम्हों के बा'द एक तीर सीनए अत़हर में आ कर पैवस्त हो गया जिस के ख़िंचते ही एक ख़ून का फ़व्वारा जारी हो गया। आप ﷺ ने उस ख़ून को अपने चेहरे पर मल लिया और फ़रमाया कि इसी ह़ालत में अपने जद्दे अमजद रसूले करीम ﷺ के पास जाउंगा।

जन्नत के नौजवानों के सरदार की शहादत

त़ाक़त जवाब दे चुकी थी, चारों त़रफ़ से तलवारों और नेज़ों की बारिश हो रही थी। आप ﷺ घोड़े पर न संभल सके। तपती हूई रेत पर गिर पड़े। दुश्मन अगर चाहता तो आप ﷺ को उस से बहोत पेहले शहीद कर देता मगर कोई शख़्स़ नबीरए रसूल ﷺ का ख़ून अपने ज़िम्मे नहीं लेना चाहता था। अब शिम्र बिन ज़ीलजोशन चल आया और ज़रआ़ इब्ने शरीक तमीमी ने आगे बढ़ कर आप के दाएं हाथ को ज़ख़्मी किया फिर शाने पर तलवार मारी। आप ज़ोअ़फ़ से लड़खड़ाए तो सनान बिन अनस नख़ईने आगे बढ़ कर नेज़ा मारा और आप बे होश हो कर गिर पड़े।

आप के लिये जन्नतुल फ़िरदौस के तमाम दरवाज़े खुल चुके थे। हूराने फ़िरदौस आप को फ़िरदौस के झोंकों से झांक रही थी। ह़ामलाने उ़रुस आप की आमद के मुंतज़िर थे। स़ालेह़ीन, स़िद्दीक़ीन और अंबिया ﷺ रूहें इस्तिक़बाले नवासाए सरवरे अंबिया ﷺ के लिये तैय्यार थी। मलाए आ'ला में एक शोर बरपा था, जब मैंकी तज़ईनो आराईश की जा रही थी कि जवानाने जन्नत का सरदार आने वाला है। **आप ने वफ़्क़े इन्तिशार ह़वास में करवट बदली और आंख खोल कर देखा तो नमाज़े अ़स़्र का वक़्त था। फ़ौरन सजदे में झूक गए और नमाज़े अ़स़्र अदा की।** इस बा'द शिम्र ने हुक्म दिया कि सर काट लो। मगर उस वक़्त भी आप ﷺ के चेहरे पर रो'बो जलाल की येह कैफ़ियत कि किसी को सर काटने की जुरअत न हूई। शीष बिन रबिआ़ आगे बढ़ा, उस की भी यही ह़ालत हूई। आख़िर शिम्र दौड़

कर आप के सीने अत़हर पर सवार हो गया और जिस्म औंधा कर के सर तन से जुदा कर दिया । दुनिया ने शक़ावत, ज़ुल्म और बरबरियत के बहोत से मनाज़िर देखें होंगे, लेकिन ऐसा ख़ौफ़नाक सानिहा न देखा और न देखेगी । اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّا اِلَیْہِ رَاجِعُوْنَ.

सय्यिदिना हुसैन رضی اللہ عنہ का जसदे मुबारक

इब्ने ज़ियाद ने उ़मर बिन सा'द को हुक्म दिया था कि हुसैन رضی اللہ عنہ की लाश को घोड़ों के टापों से रौंद डाले । अब येह तक़दीर भी ह़ज़रत हुसैन رضی اللہ عنہ के बदने मुबारक पर पूरी हुई । दस सवारों ने घोड़े दौड़ाकर आप رضی اللہ عنہ के जिस्मे अत़हर को रौंद डाला । आह ! येह वोह जिस्म मुबारक था जिस को पैग़म्बरे इलाही صلی اللہ علیہ وسلم, आप की प्यारी बेटी फ़ातिमतुज़्ज़हरा رضی اللہ عنہا और ह़ज़रत अ़ली رضی اللہ عنہ उठाए फिरते । यही वोह जिस्म था, जिस को सरवरे काएनात صلی اللہ علیہ وسلم की पुश्त मुबारक और कंधों पर सवारी का शर्फ़ नसीब हुवा । यही जिस्म ज़ख़्मों से चूर, ख़ून में शराबोर, मैदाने करबला में घोड़ों की टापों से रौंदा जा रहा है । فاعتبروا یا اُولی الابصار

इस जंग में ह़ज़रत हुसैन رضی اللہ عنہ के 72 और कूफ़ीयों के 88 आदमी मक़्तूल हूए । इस शक़ावत और क़सावत के मुज़ाहिरे के बा'द कूफ़ीयों ने वह़शत और बरबरियत का इस त़रह़ मुज़ाहिरा किया कि परवगियाने अ़फ़ाफ़ के ख़ैमों में घुस कर लूट घसूट शुरूअ़ कर दी, ख़्वातीन के सरों से चादरें उतार ली गई । ग़ौर कीजिये कि उस बेकसी के आ़लम में उन नबीज़ादीयों के क़ुलूब का क्या ह़ाल होगा । येह सब कुछ उन्हों ने कमाले स़ब्रो तशुक्र से बरदाश्त किया ।

शुहदाए करबला के सर नेज़ों पर

सिलसिलए ह़र्ब व ज़र्ब और जिदाल व क़िताल के बा'द उ़मर बिन सा'द ने अपनी फ़ौज को आराम करने का हुक्म दिया । क्यूंकि मुज़ाहिर शक़ावत से वोह थक चुके थे । दूसरे दिन मक़्तूले कूफ़ीयों की लाशें उ़मरो बिन सा'द ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ाकर दफ़न कर दी मगर शोहदाअ की लाशें वैसे ही छोड़ दीं जिन्हें बा'द में क़रीबी आबादी के लोगों ने सुपुर्दे ख़ाक किया । सह पहर को उ़मर बिन सा'द ने 72 शोहदाए

अह्ले बैत के कटे हूए सर मुख़्तलिफ़ क़बाइल के सरदारो को अला क़दरि मरातिब दो दो, चार चार और छे छे तक़सीम किए जिन को उन्हों ने नेज़ों पर चढ़ा लिया और बड़े तज़क व एह्तिशाम के साथ येह लश्कर फ़तह़ व ज़फ़र के शादियाने बजाता हूवा छेद हूए सरों को आगे आगे लिये हूए रवाना हुवा । उन सरों के ह़लक़े में अह्ले बैत की ख़्वातीन थीं जिन्हें उंटों पर सवार किया गया था ।

क़ाफ़िलाए मज़लूम का कूफ़ा में वुरूद और अह्ले कूफ़ा का मातम व शयवन

12 मुहर्रम को येह क़ाफ़िला कूफ़ा पहूंचा । कूफ़ा के लोग इस जुलूस को देखने के लिये सड़कों, छतों और गलीयों पर जमा' हो गए और शोहदा के सरों को नेज़ों पर देख कर इस त़रह़ रोना पीटना शुरूअ़ कर दिया । येह वोह लोग थे जिन्हों ने ख़ुतूत़ भेज कर ख़ुदा के वास्ते दे कर अपनी इत़ाअ़त का यक़ीन दिला कर सय्यिदिना हुसैन ﵁ को बुलाया और जब आप पहोंच गए तो रुपये-पैसे के लालच में आकर ह़ज़रत हुसैन ﵁ की बै'त से मुन्ह़रिफ़ हो गए और इब्ने ज़ियाद की फ़ौज में शामिल हो गए और ख़ानदाने नबुव्वत का ख़ातमा कर दिया । येह वही बुज़दिल और बेवफ़ा कूफ़ी थे जो ख़ूद चैनो इत्मिनान से अपने घरों में बैठे रहे और उन से सिर्फ़ 10 फ़रसख़ के फ़ासले पर मैदाने करबला में चमने रिसालत अपने ही के फ़रज़ंदों के हाथों पामाल और तबाहो बरबाद हूवा ।

इब्ने ज़ियाद का दरबार

इब्ने ज़ियाद ने इज़्हारे मसर्रत के त़ौर पर एक दरबार मुनअ़क़िद किया । तमाम क़ैदी सामने खड़े कर दिये गए और सय्यिदिना हुसैन ﵁ का सर एक त़श्त में रख कर उस के सामने लाया गया । उस बदबख़्त ने दंदान मुबारक पर क़िमची मार मार केहना शुरूअ़ किया, क्या यही वोह मुंह है जिस से तुम ने ख़िलाफ़त का दा'वा किया था ? उस वक़्त ह़ज़रत अनस ﵁ से ज़ब्त़ न हो सका, खड़े हो कर फ़रमाया बे अदब गुस्ताख़ अपनी क़िमची को हटा मैंने ख़ूद नबीए करीम ﷺ को देखा है वोह इन्हें चूमते और प्यार करते थे । ह़ज़रत ज़ैद बिन अरक़म ﵁ ने भी इन्हीं अल्फ़ाज़ का इआ़दा किया और इब्ने ज़ियाद को इस ह़रकत से डांटा ।

इब्ने ज़ियाद येह अल्फ़ाज़ और डांट सुनकर आग बगूला हो गया और येह केह कर उसी वक़्त ह़ज़रत अनस ﷺ और ज़ैद इब्ने अरक़म ﷺ को दरबार से निकलवा दिया कि "तुम्हारी स़ह़ाबियत और बुढ़ापे पर रह़म करता हूं, वरना अभी मरवा डालता" । वोह केहते हूए बाहर चले गए "तू वोह लईन है कि जब तूने फ़रज़ंदे रसूल ﷺ को शहीद करवा दिया तो हमारी हस्ती क्या है ?"

इस के बा'द इब्ने ज़ियाद ने इस कामियाबी पर खड़े हो कर ख़ुदा का शुक्रिया अदा किया कि अल्लाह ﷻ का एह़सान है जिसने हमें फ़तह़ अ़त़ा की और हमारे दुश्मनों को तंगी और मुस़ीबत में गिरफ़्तार किया ।

ह़ज़रत ज़ैनब ﷺ ने फ़रमाया : "ख़ुदा का एह़सान है जिसने हमें ख़ानदाने नुबुव्वत ﷺ में पैदा कर के शरफ़ व बुज़ुर्गी अ़त़ा फ़रमाई ।"

इब्ने ज़ियाद बोला कि "देख लो अपने भाई का अंजाम जिस ने इसे ख़ाक में मिला दिया । येह है इस की क़ुदरते जलीला" । इस के जवाब में ह़ज़रत ज़ैनुल अ़ाबिदीन ﷺ ने येह आयते करीमा तिलावत की

"قُلْ لَوْ كُنْتُمْ فِىْ بُيُوْتِكُمْ لَبَرَزَ الَّذِيْنَ كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقَتْلُ اِلٰى مَضَاجِعِهٖ"

फिर कहा के **"वोह वक़्त दूर नहीं जब हमारा और तुम्हारा मुआ़मला अह़कमुल ह़ाकिमीन के सामने पेश होगा ।"**

इब्ने ज़ियाद ने झल्लाकर पूछा "येह कौन है ?" जब मा'लूम हुवा कि ह़ज़रत ह़ुसैन ﷺ का फ़रज़ंद है तो फ़ौरन हुक्म दे दिया कि इसे क़त्ल कर दिया जाए । फिर बोला मैंने तुम्हें हुक्म नही दिया था कि नस्ले ह़ुसैन ﷺ से कोई अवलादे ज़कूर बाक़ी न रखी जाए ।

इस हुक्म पर ह़ज़रत ज़ैनब ﷺ तड़प गईं और फ़रमाया "बदबख़्त ! क्या नस्ले मुह़म्मदी ﷺ को दुनिया से नापैद करना चाहता है" । इस के बा'द आसमान की त़रफ़ हाथ उठाकर दुआ़ की कि "या इलाही !" तेरे रसूल ﷺ का सब ख़ानदान इन ज़ालिमों के हाथों बरबाद हो चुका है । तेरे रसूल ﷺ का नवासा इन्तिहाई मस़ाइब

उठाकर शहीद हो गया और अब येह शक़ी तेरे रसूल की नस्ल ही क़त्अ़ करने के दर पे है । फ़रियाद है अय बेकसों के वारिष ! फ़रियाद है अपनी बंदी की सुन और अपने रसूल ﷺ की नस्ल काइम रख !

इस दुआ़ में कुछ ऐसा दर्द था कि फ़ौरन क़ुबूल हो गई और इब्ने ज़ियाद ने अपना हुक्म वापस ले लिया ।

यज़ीद का दरबार

तीसरे रोज़ इब्ने ज़ियाद ने शिम्र की निगरानी में एक दस्ता फ़ौज के साथ हज़रत हुसैन رضي الله عنه के सर मुबारक और अह्ले बैत को यज़ीद के पास दिमश्क़ भेज दिया ।

जब अह्ले बैत की ख़्वातीन यज़ीद के मह्ल में पहूंचाई गईं तो ख़ानदाने मुआ़विया की ख़्वातीन ने उन्हें देखकर बे इख़्तियार रोना पीटना शुरूअ़ कर दिया ।

चन्द रोज़ के बा'द यज़ीद ने अह्ले बैत को मदीना की त़रफ़ रुख़्स़त किया । मुहाफ़िज़ ने रास्ते में इस मुसीबत ज़दा क़ाफ़िले से बहोत अच्छा बरताव किया जब मंज़िले मक़्सूद पर पहोंचे तो हज़रत ज़ैनब رضي الله عنها बिन्ते अ़ली رضي الله عنه और हज़रत फ़ात़िमा رضي الله عنها बिन्ते हुसैन رضي الله عنه ने अपनी चुड़ीयां और कंगन उसे भेजा और कहा येह तुम्हारी नेकी का बदला है हमारे पास इस के सिवा और कुछ नहीं कि तुम्हें दें ।

मुहाफ़िज़ ने ज़ेवर वापिस कर दिये और कहा “वल्लाह ! मेरा येह बरताब किसी दुन्यवी त़मअ़ से नहीं था । मुझे रसूलुल्लाह ﷺ की पासदारी मक़्सूद थी ।” येह मज़लूम क़ाफ़िला जब मदीना में पहूंचा तो तमाम शहर पर अफ़सुर्दगी और मायूसी छा गई । बनी हाशिम के लोग ज़ारो क़त़ार रोने लगे मगर बजुज़ स़ब्र व शुक्र के क्या चारा था । और सिवाए اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ. केहने के और क्या हो सकता था ?

ज़ुल्म का इन्तिक़ाम

यज़ीद, इब्ने ज़ियाद, उ़मर बिन सा'द, शिम्र और दीगर ज़ालिमों ने ख़मियाज़ा इसी दुनिया में बहोत जल्द भुगता । यज़ीद ने दर्दे क़ूलंज में तड़प तड़प कर 39 साल की उ़म्र में जान दी, उस ने अपने बेटे मुआविया को आख़री वक़्त में वसि़यत के लिये बुलाया मगर उस ने ख़लीफ़ा बनने से साफ़ इन्कार कर दिया ।

मुख़्तार षक़फ़ी ने क़ुव्वत पकड़ कर अह्ले बैते रसूल ﷺ के क़ातिलों को चुन चुन कर क़तल किया । उन ही में उ़मर बिन सा'द, शिम्र और दीगर हज़ारहा अश्क़िया क़तल हूए । आख़िर में इब्ने ज़ियाद का सर त़श्त में रख कर उसी मह़ल में मुख़्तार षक़फ़ी के सामने पेश किया गया जिस में सय्यिदिना हु़सैन رضي الله عنه का सर इब्ने ज़ियाद के सामने लाया गया था ।

मुख़्तार षक़फ़ी के बा'द मुस़अ़ब बिन ज़ुबैर رضي الله عنه ने रहे सहे ज़ालिमों को भी मौत के घाट उतार दिया ।

क़त्ले हु़सैन अस़ल में मर्गे यज़ीद है
इस्लाम ज़िन्दा होता है हर करबला के बा'द

बिरादराने इस्लाम :

सय्यिदिना हुसैन رضی اللہ عنہ की हयाते तय्यबा पर ग़ौर कीजिये कि उन्हों ने किस सब्र व इस्तिक़लाल, अलवउल अ़ज़मी और जवांमर्दी से दुनिया के सख़्त से सख़्त मसाइब का मुक़ाबला किया । आख़री दम तक हौसला न छोड़ा । क़याम व इन्साफ़ और हुसूले आज़ादी के लिये अपनी आंखों के सामने अपने अ़ज़ीज़ों को ख़ाको ख़ून में तड़पते देखा और आख़िर ख़ूद भी जामे शहादत नोश किया । आख़िर वक़्त में भी नमाज़ को अदा किया और 'अम्र बिल मा'रुफ़' और 'नही अ़निल मुन्कर' करते रहे ।

अय जवानाने मिल्लत ! सय्यिदिना हुसैन رضی اللہ عنہ की येह अ़ज़ीमुश्शान शहादत हमारे लिये एक दाइमी उस्वाए हसना है । वोह इस मज़लूमियत के अ़मलबरदार हैं जिस से आं हज़रत ﷺ की ज़िंदगी मर्सेअ़ है । जब भी फ़रज़ंदाने इस्लाम पर ज़ुल्मो इस्तिबदादो ग़ुलामी का अब्रे ग़लीज़ मुसल्लत होगा हज़रत सय्यिदिना हुसैन رضی اللہ عنہ का उस्वाए हसना रेहनुमाई करेगा ।

काश अहले बैत की ख़ुसूसी मुहब्बत का दम भरने वाले सय्यिदिना हुसैन رضی اللہ عنہ की अ़ज़ीमुश्शान क़ुरबानी के असल मक़सद पर ग़ौर करें । अल्लाह तआ़ला सब कल्मागो मुसलमानों को सय्यिदिना हुसैन رضی اللہ عنہ के दिलेराना नक़शे क़दम पर चलने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए । आमीन ।

وأمـا مـن قتـل الـحسين،أو أعان على قتله، أورضى
بـذلك فعليه لعنة الله والملائكة والناس أجمعين،لا يقبل الله
منه صرفا ولاعدلا۔

‘जिसने हुसैन ؓ को कत्ल किया, कत्ल में मदद की या कत्ले हुसैन ؓ पर इज़्हारे रज़ामन्दी किया, उस पर अल्लाह की, फिरिस्तों की और तमाम इन्सानों की ला’नत है, अल्लाह उसकी इबादत कुबूल नहीं करेगा और ना उससे कोई फिद्या कुबूल किया जाएगा ।’

(इब्ने तैमिया फी मजमउल फतावा, स.487)

Imam Jafar Sadiq Foundation
(Ahle Sunnat)

IMAM JAFAR SADIQ FOUNDATION
Ahl-E-Sunnat
Reg.No. E/1432/Aravalli, GUJARAT, INDIA

Modasa, Aravalli, Gujarat (India)
Mo. 85110 21786